संसदीय सरिता

अंक–3

भारत सरकार

संसदीय कार्य मंत्रालय

दिसंबर -- 2016

श्री प्रभास कुमार झा, तत्कालीन सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय 14 सितंबर, 2016 को हिंदी दिवस के अवसर पर भारत के माननीय राष्ट्रपति से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

अनंतकुमार
ANANTHKUMAR
ಅನಂತಕುಮಾರ್

सत्यमेव जयते

रसायन एवं उर्वरक
तथा संसदीय कार्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF CHEMICALS & FERTILIZERS
AND PARLIAMENTARY AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA

26 फरवरी, 2017

<u>संदेश</u>

यह अति हर्ष का विषय है कि संसदीय कार्य मंत्रालय हिंदी पत्रिका **संसदीय सरिता** का तीसरा अंक निकालने जा रहा है। राजभाषा हिंदी केवल सरकारी कामकाज की दृष्टि से ही नहीं बल्कि हर तरह से राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने का काम करती है। यह प्रमाणित हो चुका है कि देश के विभिन्न लोगों के बीच संपर्क सूत्र कायम रखने की क्षमता हिंदी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में नहीं है। संसदीय कार्य मंत्रालय राजभाषा हिंदी को आगे ले जाने की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील रहा है।

मैं पत्रिका के संपादक वर्ग को उनके सराहनीय कार्य के लिए बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि पत्रिका का यह अंक रोचक और लाभप्रद होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(अनंतकुमार)

Office : Room No.316, Shastri Bhawan, Dr. Rajendra Prasad Road, New Delhi–110001 Tel : +91-11-23383559, 23386519 Fax : +91-11-23384020
Office : Room No.15, Parliament House, New Delhi –110001 Tel : +91-11- 23017780, 23017798, 23018729 Fax : +91-11-23792341
Residence : 26, Tughlak Crescent, New Delhi – 110011 Tel : +91-11-23794754, Fax : +91-11-23012791
Bengaluru Office : 15th Cross, 2nd Block, Jayanagar, South End Circle, Bengaluru – 560 011
Telefax : +91-80-26560286, 26571188 e-mail : ananthkumardelhioffice@gmail.com, ananth@ananth.org
Visit : www.ananth.org

Rajiv Yadav, I.A.S.
Secretary

संसदीय कार्य मंत्रालय
संसद भवन, नई दिल्ली-११० ००१
Ministry of Parliamentary Affairs
Parliament House, New Delhi-110001

सत्यमेव जयते

6 मार्च, 2017

संदेश

संसदीय कार्य मंत्रालय की पत्रिका "संसदीय सरिता" का तीसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे हर्ष है। राजभाषा संबंधी कार्यकलापों को प्रोत्साहन देने की दिशा में मंत्रालय द्वारा उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है जिसके लिए मंत्रालय के कार्मिक बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में संसदीय कार्य मंत्रालय की विभिन्न महत्वपूर्ण गतिविधियों तथा मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों के लेखों को शामिल किया गया है। पत्रिका को समृद्ध बनाने में दिये गये सहयोग के लिए मैं सभी को धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ।

मुझे आशा है कि पत्रिका का यह अंक पाठकों को पसंद आएगा। मैं यह भी आशा करता हूं कि पत्रिका में दी गई जानकारी मंत्रालय के कार्मिकों के साथ-साथ अन्य पाठकों के लिए भी लाभदायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित,

6/3/17

(राजीव यादव)

E-mail : secympa@nic.in, Tel. : 23034644, 23017663, Fax : 23017726

संसदीय सरिता

अंक---3

वर्ष 2015-16

संरक्षक
सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय

संपादक
श्रीमती सरोज शर्मा

सहायक संपादक
सुश्री मृगनयनी पाण्डेय

प्रकाशक
संसदीय कार्य मंत्रालय,
88, संसद भवन, नई दिल्ली-110001

वेबसाईट mpa.gov.in

पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार से
संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
लेखों में व्यक्त किए गए दृष्टिकोण
स्वयं लेखकों के हैं।

इस अंक में

संपादकीय — सरोज शर्मा

राजभाषा समाचार

1 मुसकुराओ
2 सरकारी कामकाज एंव राजभाषा हिंदी का प्रयोग
3 रेकी एक स्पर्श चिकित्सा
4 मंत्रालय की गतिविधियां
5 फिर आयो बसंत
6 प्रौढ़ावस्था में स्वास्थ्य की देखभाल
7 अनमोल वचन
8 स्वयं स्वच्छता अभियान
9 काव्य कुंज
i भारतवाणी हिन्दी
ii जिंदगी एक मुस्कान भी है
10 सामान्य प्रयोग के हिन्दी शब्द

संपादकीय

"जलाने वाले जलाते ही हैं चिरागे आखिर"
"ये क्या कहा कि हवा तेज है ज़माने की"

राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हमारी प्रतिबद्‌यता को व्यक्त करते हुए संसदीय सरिता का तृतीय अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

हमारी अपनी भाषा ही हमारे मर्म की भाषा और भावों की अभिव्यक्ति की भाषा बन सकती है। "संसदीय सरिता" पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों की भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक सहज रूप है।

लेखन कार्य भावनाओं को परिशुद्ध करता है, वैचारिक दृष्टि से विश्लेषण **सामर्थ्य** बढ़ाता है एवं सम्प्रेषण कौशल में वृद्धि करता है। इसके साथ-साथ इससे अपने परिवेश के प्रति जागरूकता बढ़ती है। लिखने की आदत के बारे में इन पंक्तियों में सही कहा गया हैं

"लिखने की आदत भली , कलम सदा हो हाथ"
"जहां रहे जिस हाल में, लिख डाले जज्बात"

इसमें संदेह नही है कि हिंदी के राजभाषा घोषित होने के पश्चात इसका व्यवहार व कार्यक्षेत्र बढ़ गया है। हिंदी आज साहित्यक भाषा के रूप में ही नही बल्कि कार्यालयीन, तकनीकी, सामाजिक एवं वाणिज्यिक भाषा के रूप में भी प्रयोग में लाई जा रही हैं। सूचना-क्रांति के इस दौर में व्यवस्थित व सफल प्रबंधन के लिये भी यह अनिवार्य हो गया है कि जनभाषा में ही संवाद स्थापित किया जाए। यही कारण है कि सभी क्षेत्रों में विजन और मिशन को **प्रतिबिंबित** और प्राप्त करने के लिए सभी का उत्साह वर्धन करने में हिंदी की विशिष्ट भूमिका है।

आज राजभाषा हिंदी विश्व स्तर की भाषा मानी जा रही है। हिंदी के विकास की सफल प्रक्रिया को सुचारू व विश्वव्यापी बनाने में तत्कालीन उच्चतम शासकीय प्रशासन की, भारत को विश्व से राजभाषा द्‌वारा जोड़ने की नीति के तहत, हिंदी भाषा उत्तरोतर अगले उच्च सोपानो पर पहुंच कर सरकारी लक्ष्यों को छूती नजर आ रही है।

हम सबका यह संवैधानिक दायित्व है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्‌देश्य में सकारात्मक योगदान प्रदान करें। क्योकि हिंदी हमारी मातृभाषा के साथ देश की सभी क्षेत्रीय भाषाओं की सामाजिक संस्कृति को अपने अंदर समाहित कर देश की राजकाज की भाषा हिंदी ही है।

अमृतलाल नागर का यह जन्मशती वर्ष है। पारम्परिक किस्सागोई और विराट पांडित्य को आधुनिक चेतना के साथ जोड़कर नागरजी ने कई अमर रचनाओं से हमें समृद किया है।

प्रस्तुत अंक पर आपकी प्रतिक्रियाओं, सुझावों व आगामी अंक के लिए मौलिक अप्रकाशित रचनाओं का स्वागत हैं।

सरोज शर्मा (भारतीय रिजर्व बैक)
(सदस्य हिंदी सलाहकार समिति)

“फूलो की दोस्ती से कांटों की दोस्ती अच्छी है, जो हमें कठिन से कठिन रास्ते पर चलने के लिए प्रेरणा देती है”

“जैसी हमारी इच्छाएं होती है जैसे हमारे भाव होंगे, ठीक उसी के अनुरूप हमारी भाव भंगिमा हमारे मुख मंडल पर दिखाई देने लगती।

स्वेट मार्ड्न

राजभाषा समाचार

भाषा के मामले मे युरोप से चार गुना समप्न्न है भारत

जाने माने भाषा विज्ञानी श्री गणेश एन. देवी के सर्वेक्षण से यह बात सामने आई है कि भारत में 850 भाषाएं हैं, जबकि युरोप मे 250 भाषाएं हैं। ब्रिटेन में केवल चार-पांच भाषाएं बोली जाती हैं। जबकि अकेले असम में 52 भाषाएं हैं। भारत में कार्यालयों, अदालतों में 22 भाषाओं में काम होता हैं। जबकि इग्लैंड में अग्रेंजी और वेल्स कार्यव्यवहार की भाषाएं हैं।

सिविल सेवा परीक्षा में अग्रेंजी की अनिवार्यता का नियम वापिस

संघ लोक सेवा आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा में अग्रेंजी को अनिवार्य विषय बना दिया था। संसद में भारी विरोध के बाद संघ लोक सेवा आयोग ने पूर्व की स्थिती बहाल कर दी है। जिसके अनुसार भारतीय भाषाओं और अग्रेंजी के पेपर मैट्रीक स्तर के होंगे।

दलाई लामा की बेबसाईट हिंदी में शुरू

आध्यात्मिक गुरू दलाई लामा की अधिकाधिक वेबसाईट हिंदी में शुरू की गई हैं ताकि हिंदी भाषी लोग ऑनलाईन उनके विचार जान सके। साईबर दुनिया में दलाई लामा के लाखों प्रशंसक हैं।

दिल्ली कोर्ट में पहली बार हिंदी में निर्णय

दिल्ली के न्यायिक इतिहास में पहली बार एक आदेश को हिंदी में लिखाया गया। कडकडडूमा स्थित पारवारिक मुकदमे पर सुनवाई करते हुए जज ए. एस. जयचन्द्रा ने अपना निर्णय हिंदी में दिया।   बधाई।

थाई यूनिवर्सिटी में हिंदी पीठ

थाईलैंड के साथ जनसंपर्क को बढ़ावा देने के मकसद से 1934 में स्थापित थम्मासत यूनिवर्सिटी में हिंदी के लिए आई.सी.सी.आर. स्थपित की जाएगी। वहां के सिलकापोर्न यूनिवर्सिटी संस्कृत अध्ययन की व्यवस्था होगी।

पुरस्कार/सम्मान

साहित्य अकादमी पुरस्कार

हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार डॉ रमेशचन्द्र शाह को वर्ष 2014 का साहित्य अकादमी पुरस्कार उनके उपन्यास “विनायक” के लिए दिया गया है। उर्दू के लिए मुनव्वर राणा को दिया गया।

भाषा सम्मान

साहित्य अकादमी ने डॉ जसपाल सिंह को कालजयी और मध्यकालीन साहित्य (उत्तरी) के क्षेत्र में विशिष्ट योग्दान के लिए तथा भीली भाषा को समृद्ध करने वाले वसन्त निर्गुणे को भाषा सम्मान दिया गया।

प्रस्तुति सरोज शर्मा
(भारतीय रिजर्व बैंक)

<u>फिर भी आप न मुस्कुराए तो-------</u> ?

1. मुस्कुराओ ------- क्योंकि यह मनुष्य होने की पहली शर्त है एक पशु कभी भी नही मुस्कुरा सकता।
2. मुस्कुराओ ----- क्योकि मुस्कान ही अच्छे चेहरे का वास्तविक श्रंगार है। मुस्कान आपको किसी बहमूल्य आभूषण के अभाव में भी सुंदर दिखायेगी।
3. मुस्कुराओ ------ क्योंकि दुनिया का हर आदमी खिले चेहरों और खिले फूलों को पंसद करता है।
4. मुस्कुराओ ------ क्योंकि क्रोध में दिया गया आशीर्वाद भी बुरा लगता है और मुस्कुरा कर कहे शब्द भी अच्छे लगते हैं।
5. मुस्कुराओ ------ क्योंकि परिवार में रिश्ते तभी तक कायम रह पाते है जब तक हम एक दुसरे को देख कर मुस्कुराते हैं।
6. मुस्कुराओ ------ क्योंकि आपकी हंसी किसी की खुशी का कारण बन सकती है।
7. मुस्कुराओ ----- क्योंकि मुस्कुराना ही जिंदा होने की पहली पहचान है।

संकलित

सरकारी काम-काज एवं राजभाषा हिंदी का प्रयोग

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा का दर्जा दिया गया था। वर्ष 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया, जिसका वर्ष 1967 में संशोधन हुआ तथा वर्ष 1968 में भाषा नीति विषयक सरकारी संकल्प संसद ने स्वीकार किए। अनुच्छेद 351 के तहत संघ सरकार को हिंदी के प्रचार-प्रसार की जिम्मेवारी सौंपी गयी है। अनुच्छेद 343 की धारा 3(3) के तहत कुछ दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में जारी करने के निर्देश जारी किए गए हैं।

संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया है जो प्रति वर्ष एक प्रतिवेदन तैयार करके सदन के पटल पर अनुमोदन हेतु प्रस्तुत करती है। इसके अलावा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, केंद्रीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय अनुवाद ब्युरो आदि की स्थापना की गई है। भारत सरकार ने गृह मंत्रालाय के अंतर्गत पूर्ण रूप से सचिव स्तर पर राजभाषा विभाग की स्थापना की है। इस प्रकार राजभाषा नीति का प्रतिपादन किया गया है। राजभाषा विभाग के अंतर्गत केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान कार्य कर रहा है, जिसके अंतर्गत हिंदी आशुलिपी, हिंदी टंकण, आदि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके तहत भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, संबंद्ध एंव अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों, आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के साथ-साथ एक बहुत बड़ी जमात को हिंदी आशुलिपि एंव हिंदी टंकण का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसमें कुछ लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं, जिन्हें सभी मंत्रालायों, विभागों, संबंद्ध एंव अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों को पूरा करना होता है। प्रत्येक कार्यालय में एक राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया जाता है जो हिंदी के प्रयोग का जायजा लेती है। भारत सरकार ने विभिन्न कार्यालयों में हिंदी टंकण से लेकर निदेशक (राजभाषा) स्तर तक के पद सृजित किए हैं । केन्द्रीय हिंदी समिति का गठन किया गया है। जिसके स्वयं प्रधानमंत्री अध्यक्ष हैं। वास्तव में इन कार्यालयों में एक सम्पूर्ण हिंदी यूनिट कार्य कर रही है। देवनागरी लिपि और हिंदी वर्तनी का मानकीकरण किया गया है। वर्ष 1967 में भारत सरकार की स्वीकृति से हिंदी वर्तनी के मानकीकरण रूप में एक पुस्तक का प्रकाशन हुआ है जिसमें अनुस्वार, अपव्यय, अनुनासिका, चन्द्र बिंदु, विदेशी ध्वनियां, हल, चिन्ह आदि के बारे में सर्वमान्य निर्धारित नियमों का स्पष्टीकरण दिया गया है। इसमे कोई संदेह नही है कि हिंदी का प्रयोग न केवल उत्तरी राज्यों में बड़ा है बल्कि हिंदीतर राज्यों में भी इसके प्रयोग में रूचि बड़ी है। बाजार, मीडिया और फिल्मों के कारण पूरे भारत में हिंदी का प्रयोग बडा है।

वस्तुत: एक बहुत बड़ी जमात हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में लगी है, इसके अतिरिक्त सरकार ने इसका प्रयोग बढ़ाने के लिये कई प्रकार के प्रोत्साहन पुरस्कार भी निर्धारित किए हैं। परन्तु पिछले कई वर्षो से इन प्रोत्साहन राशियों में कोई विशेष वृद्धि नहीं की गई है। जिससे प्रतीत होता है कि सरकार हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के प्रति अधिक गम्भीर नहीं है। सरकार ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिये प्रेरणा एवं प्रोत्साहन पर बल दिया है। आज सभ्य समाज में अग्रेजी बोलने वालों को महत्व दिया जाता है, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की यह नीति अंग्रेजियत की मानसिकता को दबाने में नाकाम रही है। सच यह है कि किसी भी देश की उन्नति उसकी अपनी भाषा पर निर्भर करती है, चूंकि भारत में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या हिंदी की अपेक्षा कहीं कम है। इसलिए हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। हिंदी के साथ-साथ प्रांतीय भाषाओं को भी प्रोत्साहित किया जाना जरूरी है। असल में हिंदी ही देश को उन्नति के शिखर पर ले जा सकती है।

यदि मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों आदि में उच्च स्तर पर हिंदी के प्रयोग के प्रति अधिक गंभीरता लाई जाती है तो हिंदी अवश्य ही निचले स्तर पर भी व्यापक रूप ले लेगी। स्थिति यह है कि सरकार की हिंदी की इस ढुलमुल नीति के चलते अंग्रेजियत की मानसिकता पूरी तरह से हावी है। इसका स्पष्ट उदाहरण यह है कि आज भी भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे कई शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थानों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी को प्रमुखता दी जाती हैं। आज के इस कंप्यूटर युग में व्यापक स्तर पर हिंदी के साफ्ट्वेयर तैयार किए गए हैं और इनका प्रयोग भी हो रहा है। ऐसा कुछ नहीं है कि हिंदी का प्रयोग कंप्यूटर या किसी अन्य माध्यम से न हो सके, केवल हिंदी के प्रयोग के प्रति जागरुकता एवं सकारात्मक रूख अपनाए जाने की जरूरत है। अंग्रेजी के कठिन शब्दों का लिप्यिंतरण किया जा सकता है। अगर हम अपने अंत:करण से इसके प्रति रूचि रखेंगे तो अवश्य ही इसका पूर्ण रूपेण इस्तेमाल होगा।

भारत एक बहुभाषी देश है, इसमें कई बोलियां एवं भाषाएं प्रचलित हैं, कुछेक को भारत के संविधान में मान्यता दी गई है, इसलिए हिंदी का संपर्क भाषा के रूप में पूर्ण रूपेण विकास होना बहुत आवश्यक है। हिंदी का प्रचार-प्रसार न केवल भारत में वरन विश्व के अन्य कई देशो में बढ़ा है, हिंदी भाषा विश्व की सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोले जाने वाली द्वितीय स्तर की भाषा है, इसलिए प्रांतीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करना बेहद जरूरी है। तभी भारत विश्व मंच पर एक सर्वोच्च आर्थिक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आएगा।

राजाराम मोहन राय, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि जैसे महान पुरूषों ने देश में राष्ट्रीय भावना की जागृति के साथ-साथ राष्ट्रभाषा के रूप हिंदी का प्रचार-प्रसार किया था, क्योंकि उनका मानना था कि केवल हिंदी ही राष्ट्र को एकसूत्र में पिरो सकती हैं, हिंदी एक सबल,

सशक्त, सम्पन्न, वैज्ञानिक एवं समृद्ध भाषा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि कोई भी देश राष्ट्रभाषा के बिना गूंगा है, इस संबध में निम्नलिखित पंक्तियां स्वयं इस बात को चरितार्थ करती है–

"निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल"
"बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिए को शूल"

सरोज शर्मा
(सदस्य हिंदी सलाहकार समिति)

रेकी - एक स्पर्श चिकित्सा

रेकी यानि स्पर्श चिकित्सा एक आध्यात्मिक अभ्यास पद्धति हैं, जिसके द्वारा रोगों का इलाज किया जाता है। इस पद्धति का विकास अठारहवीं शताब्दी के मध्य में जापान के एक प्रध्यापाक डॉ. मिकायो ऊसई ने किया था। मान्यता के अनुसार रेकी का उद्गम उत्तर भारत में हुआ था। यह भी कहा जाता है कि रेकी विद्या खुद भगवान शिव ने अपने हाथों से लिखी थी। हजारों वर्षों पहले भी भारत में स्पर्श चिकित्सा का ज्ञान था। बड़े-बड़े संत महात्माओं, पीर, दिगम्बरों द्वारा हाथ लगाकर लोगों का इलाज किया जाता था। हमारे प्राचीन ग्रंथो (जो कि संस्कृत में लिखे गये थे) में भी कमल सूत्र का वर्णन है। इसी सूत्र का प्रयोग करके भगवान बुध भी लोगो के रोगों का उपचार किया करते थे। यह विद्या गुरू अपने शिष्यों को दीक्षा देकर प्रदान किया करते थे। लिखित में इस विद्या का वर्णन न होने के कारण यह विद्या भारत में लुप्त होती गई इसी विद्या को डॉ मिकाओ ऊसाई ने अपने गहन अध्ययन और साधना के द्वारा खोज निकाला और विश्व भर में इसका प्रचार किया। डॉ मिकाओ ऊसई के प्रथम शिष्य डॉ हयाशी ने इस विद्या को लेखबद्ध किया और इस संबध में कई नियम बनाए।

रेकी एक जापानी शब्द है। इसमें 'रे' का अर्थ है ब्रहमांड और 'की' का अर्थ है जीवनदायिनी शाक्ति – ब्रहमांड की जीवनदायिनी शक्ति, जिसे प्राण ऊर्जा भी कहा जाता है। जो इस पूरे संसार को चला रही है। इसी प्राण ऊर्जा का प्रयोग उपाचार के लिए किया जाता हैं। इसी ऊर्जा के द्वारा समस्याओं की जड़ में जाकर उसका उपचार खोजा जाता है। फिर प्राण ऊर्जा रोगी के शरीर में स्पर्श के द्वारा प्रवाहित की जातीहै। यह ऊर्जा रोगी को रोग मुक्त करने में सहायता करती है।

रेकी सीखने के लिये एक मास्टर या ग्रेंड मास्टर अर्थात गुरू का होना परम आवश्यक है। गुरू एट्युनमेंट द्वारा शिष्य को यह विद्या प्रदान करता है। एटयुनमेंट से शिष्य के शरीर में स्थित शक्ति केंद्र पूरी तरह गतिमान हो जाते हैं, जिससे उनमें से प्राण ऊर्जा का संचार होने लागता है। एट्युनमेंट में विभिन्न प्रकार के एहसास होते है जैसे कि तंरगे महसूस होना, हाथों और मस्तक का गर्म हो जाना आदि। फिर इसी प्राण ऊर्जा का प्रयोग करके हाथों के द्वारा रोगों का उपचार किया जाता है तथा रोगी की नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक ऊर्जा में बदला जाता है।

रेकी विद्या के 4 लेवल हैं-

1. रेकी प्रथम डिग्री - इसमें शक्तिपत या एट्युनमेंट लेने से एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में शिष्य चार गुना प्राण ऊर्जा को अपने शरीर में समहित कर पाता है। परन्तु प्रथम डिग्री में रेकी केवल स्पर्श के द्वारा ही रोगी को प्रदान की सकती है, अर्थात उपचार लेने के लिये रेकी चैनल और रोगी का एक

स्थान पर स्थित होना आवश्यक है। केवल 2 दिन के शिविर में प्रतिदिन 5 घंटे की क्लास में इस डिग्री को प्राप्त किया जा सकता है।

2. रेकी द्वितीय डिग्री – इसे रेकी डॉक्टर डिग्री भी कहा जाता है। इसमें उपाचार के लिए कई सूत्र सिखाए जाते हैं जिनका प्रयोग करने से रेकी उपचार विश्व में कही भी किसी को भी घर बैठे ही दिया जा सकता है। साथ ही उपचार भी शीघ्रता से होता है क्योंकि द्वितीय डिग्री के एट्युनमेंट में शिष्य एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में 16 गुना प्राण ऊर्जा को अपने शरीर में समाहित कर पाता है। इस डिग्री में डॉक्टर सर्जरी अथवा अन्य डाक्टरी विधियां सिखाई जाती हैं, जिनका प्रयोग करके उपचार में तेजी लाई जा सकती है, और पारिणाम भी काफी अच्छा होता है। यह दो दिन का शिविर होता है।

3. रेकी मास्टर डिग्री – इस डिग्री में शिष्य को एट्युनमेंट द्वारा 32 गुणा प्राण ऊर्जा ग्रहण करने योग्य बनाया जाता है। रेकी मास्टर ही आगे लोगों को प्रथम डिग्री की शिक्षा दे सकता है। (एक दिन का शिविर)

4. रेकी ग्रेंडमास्टर डिग्री - रेकी ग्रेंडमास्टार मास्टर डिग्री की विद्या प्रदान कर सकता है तथा यह कोर्स सीखने से एनर्जी लेवल 40 गुना बढ़ जाता है। (एक दिन का शिविर)

रेकी सीखने के बाद प्रतिदिन इसका अभ्यास करना पड़ता है। अभ्यास द्वारा इस विद्या का प्रभाव और अधिक हो जाता है।

आज के भाग दौड़ भरे जीवन में चिंता और तनाव हो जाना स्वभाविक ही है। यही चिंता, क्रोध, लोभ, उत्तेजना और तनाव शरीर के अंगो में हलचल पैदा करते हैं, जिससे हमारे शरीर में अनेक प्रकार के विकार पैदा हो जाते हैं। शारीरिक रोग इन्ही विकृतियों के परिणाम हैं। शारीरिक रोग मानसिक रोगों से प्रभावित होते हैं। रेकी बीमारी के कारणों को दबाती नहीं है परन्तु जड़ से नष्ट करती है। स्वास्थ्य स्तर को उठाती है। रेकी के द्वारा मानसिक भावनाओं का संतुलन होता है तथा तनाव बेचैनी और दर्द से छुटकारा मिलता है। रेकी हर प्रकार की बीमौरी जैसे कैंसर, रक्तचाप, डिप्रेशन, अल्सर, एसिडिटी दर्द सरवाइकल, डेंगू बुखार आदि का उपचार करने सक्षम है। शोध द्वारा पता चला है कि जिन बीमारियों का उपचार आयुर्वेद, ऐलोपैथी या होम्योपैथी में भी नही है उन बीमारियों को रेकी विद्या से ठीक किया जा सकता है। उपचार की दूसरी पद्धतियों की तुलना में रेकी विद्या सीखने के अनेक लाभ हैं।

1. इसे मात्र 2 दिन के प्रशिक्षण से सीखा जा सकता है।
2. इसे किसी भी आयु, शैक्षणिक योग्यता व उम्र का व्यक्ति सीख सकता है।
3. रेकी की उपचार पद्धति के कोई साइड इफेक्ट्स नही हैं।
4. रेकी ऊर्जा चारों लेवल पर उपचार करती है चाहे रोग मानसिक हो, शारीरिक हो या आध्यात्मिक।
5. रेकी के निरन्तर अभ्यास से अपने शरीर को हमेशा के लिये रोग मुक्त किया जा सकता है।
6. इससे हमारा आध्यात्मिक विकास भी होता है।
7. रेकी से जो नकारात्मक ऊर्जा निकलती है वह किसी पर बुरा असर नहीं डालती है अपितु ब्रह्मांड में जाकर विलीन हो जाती है और सकारत्मक ऊर्जा में परवर्तित हो जाती है।

{यदि आप भी अपने व्यक्तित्व में बदलाव लाना चाहते हैं और स्वंय को रोग मुक्त रखना चाहते हैं तो रेकी विद्या सीखिए और तनावमुक्त, रोगमुक्त जीवन बिताइये}

सुरभि गुसाई
(रेकी हीलर)

युवा संसद अनुभाग

युवा वर्ग में प्रजातांत्रिक भावना के विकास के उदेश्य से युवा संसद प्रतियोगिता की योजना देश में पहली बार इस मंत्रालय द्वारा शिक्षा निदेशालय, दिल्ली के सहयोग से वर्ष 1966-67 में दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शुरू की गई। इस कार्यकलाप का और अधिक विस्तार करने के लिए नई दिल्ली नगर पालिका परिषद द्वारा चलाए जा रहे विद्यालयों को युवा संसद योजना में वर्ष 1995 से शामिल कर लिया गया। राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता की 3 अलग योजनाओं के अंतर्गत केंद्रीय विद्यालयों, जवाहर नवोदय विद्यालयों और विश्वविद्यालयों तक भी युवा संसद योजना का विस्तार किया गया। प्रत्येक प्रतियोगिता से पहले मंत्रालय प्रतिभागी विद्यालयों/विश्वविद्यालयों में इस कार्यकलाप के प्रभारी अध्यापकों के लाभ और मार्गदर्शन के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित करता है। प्रत्येक प्रतियोगिता की समाप्ति पर, मंत्रालय द्वारा एक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया जाता है और पुरस्कार विजेता विद्यार्थियों, संस्थाओं और प्रधानाचार्यो/प्रभारी अध्यापकों को ट्राफियां, मेडल और प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं।

दिनांक 1.1.2016 से 31.12.2016 की अवधि के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाॅ हुई:-

1. विश्वविद्यालयों/कॉलेजों के प्रोफेसरों क लिए 4-5 जनवरी, 2016 को शिलाँग में अभिविन्यास पाठयक्रम आयोजित किया गया।

2. 21 जनवरी, 2016 को शिक्षा निदेशालय और नई दिल्ली नगर पालिका परिषद के विद्यालयों के लिए 50वीं युवा संसद प्रतियोगिता के विद्यालयों और विद्यार्थियों को पुरस्कृत करने के लिए पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया।

[50वीं युवा संसद प्रतियोगिता के अवसर पर ग्रीनफील्ड पब्लिक स्कूल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली के विद्यार्थी]

3. केंद्रीय विद्यालयों, दिल्ली विद्यालयों और जवाहर नवोदय विद्यालयों के लिए अप्रैल-मई, 2016 के दौरान अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किए गए।

4. केंद्रीय विद्यालयों के लिए 28वीं राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता के विजेता विद्यालयों और विद्यार्थियों को पुरस्कृत करने लिए पुरस्कार वितरण समारोह 1 जुलाई, 2016 को आयोजित किया गाय जिसकी अध्यक्षता श्री राजीव प्रताप रूड़ी, कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा तत्कालीन संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री ने की।

[श्री राजीव प्रताप रूडी, कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) केन्द्रीय विद्यालयों के पुरस्कार विजेता विद्यार्थियों और अध्यापकों के साथ 1 जुलाई, 2016 को जी.एम.सी. बालयोगी सभागार, संसद ग्रंथालय भवन, नई दिल्ली में आयोजित 28वीं राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता, 2015-16 के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर]

5. जवाहर नवोदय विद्यालयों के लिए 19वीं राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता, 2014-15 के पुरस्कार विजेता विद्यालयों और विद्यार्थियों को पुरस्कृत करने के लिए पुरस्कार वितरण समारोह 13 जुलाई, 2016 को आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री एस.एस. आहलुवालिया, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री ने की।

[श्री एस.एस. अहलुवालिया, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री जवाहर नवोदय विद्यालय, लेह के पुरस्कार विजेता विद्यार्थियों और अध्यापकों के साथ 13 जुलाई, 2016 को जी.एम.सी. बालयोगी सभागार, संसद ग्रंथालय भवन, नई दिल्ली में आयोजित जवाहर नवोदय विद्यालयों के लिए19वीं राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर]

6. विश्वविद्यालयों/कॉलेजों के लिए 12वीं राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता 2014-15 के पुरस्कार विजेता विद्यार्थियों और संस्थानों को पुरस्कृत करने के लिए पुरस्कार वितरण समारोह 8 जून, 2016 को आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री राजीव प्रताप रूड़ी, कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा तत्कालीन संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री ने की।

[12वीं राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता, 2014-15 के अवसर पर गण्यमान्य व्यक्तियों के साथ जाधवपुर विश्वविद्यालय के पुरस्कार विजेता]

<u>विधायी अनुभाग द्वारा किये गये मुख्य कार्य</u>

जनवरी, 2016 से दिसंबर, 2016 तक तीन सत्र बुलाए गए।

1. बजट सत्र (भाग 1 तथा 2)
2. शीतकालीन सत्र
3. मानसून सत्र

<u>राष्ट्रपति का अभिभाषण और अध्यादेश</u>

संविधान का अनुच्छेद 87(1) आज्ञापक है, क्योंकि यह राष्ट्रपति को प्रत्येक आम चुनाव के पश्चात प्रथम सत्र के प्रारम्भ में और प्रत्येक कलैण्डर वर्ष के प्रथम सत्र के प्रारम्भ में भी संसद के दोनों सदनों की समवेत बैठक में अभिभाषण देने के लिए आदिष्ट करता है। कलैंडर वर्ष के पहले सत्र के आरंभ में दिनांक 23 फरवरी, 2016 को राष्ट्रपति द्वारा अभिभाषण दिया गया।

<u>अध्यादेशों के बारे में प्रावधान</u>

अनुच्छेद 123 के अनुसार यदि किसी समय (जबकि संसद के दोनों सदनों का सत्र नहीं चल रहा है) राष्ट्रपति संतुष्ट हैं कि ऐसी परिस्थितिया हैं जिनके कारण उनको तत्काल कारवाई करना आवश्यक हो गया हो, तो वे परिस्थितियों की अपेक्षानुसार ऐसा अध्यादेश प्रख्यापित कर सकते हैं। ऐसे अध्यादेश संसद के अधिनियम के समान शक्तिमान और प्रभावी होंगे। लेकिन उसमें ऐसा कोई प्रावधान नहीं होना चाहिए जिसके लिए सविधान के अधीन संसद अधिनियम बनाने के लिए सक्षम नहीं हो। उक्त अनुच्छेद में यह भी कहा गया है कि अध्यादेशों को संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखा जाए। इसका निरनुमोदन चाहने वाले सांविधिक संकल्प पेश करने के निए भी प्रावधान है। संविधान के अन्तर्गत एक अध्यादेश संसद के पुन :सत्रारम्भ से छ :सप्ताह की समाप्ति पर अथवा यदि उक्त अवधि की समाप्ति से पूर्व उसका निरनुमोदन चाहने वाले संकल्प दोनों सदनों द्वारा पारित हो जाते है तो इन संकल्पों के दूसरे संकल्प के पारित होने पर, निष्प्रभाव हो जाता है। जब संसद के सदनों के सत्रारम्भ भिन्न-भिन्न तारीखों को होते है तो छ :सप्ताह की अवधि की गणना इसमें से बाद की तारीख से की जाएगी।

दोनों सदनों के प्रक्रिया नियमों में अध्यादेशों के प्रख्यापन के लिए परिस्थितियों को स्पष्ट करने वाले विवरण सभा पटल पर रखने का प्रावधान किया गया है ताकि अध्यादेशों पर विचार करते समय सदस्यगण उसका उपयोग कर सकें।

संसदीय कार्य मंत्री अध्यादेशों की प्रतियों को सभा पटल पर रखते हैं। जनवरी, 2016 से दिसंबर, 2016 की अवधि के दौरान 10 अध्यादेशों प्रख्यापित किए गए।

<u>निष्पादित सरकारी कार्य का सार</u>

<u>विधायी</u>

सोलहवीं लोक सभा के **सातवें, आठवें, नौवें और दसवें सत्र तथा राज्य सभा के 238वें, 239वें, 240वें और 241वें सत्र** की समाप्ति पर कुल 60 विधेयक (लोक सभा में 20 विधेयक और राज्य सभा में 40 विधेयक) लंबित थे।

प्रतिवेदित अवधि के दौरान, दोनों सदनों में 42 विधेयक (लोक सभा में 40 विधेयक तथा राज्य सभा में 2 विधेयक) पुर:स्थापित लेंबित थे।

इनमें से, दोनो सदनों द्वारा 43 विधेयक पारित किए गए। लोक सभा में 2 विधेयक तथा राज्य सभा में 2 विधेयकों को वापस लिया गया।

<u>अन्य गैर-सरकारी कार्य</u>

प्रतिवेदित अवधि के दौरान, लोक सभा में 4 और राज्य सभा में 9 ध्यानाकर्षण प्रस्तावों पर चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त लोक सभा में आधे धंटे की एक चर्चा हुई । दिनांक 01.01.2016 से 31.12.2016 की अवधि के दौरान, गैर-सरकारी सदस्यों के 216 विधेयक (168 विधेयक लों सभा में और 48 विधेयक राज्य सभा में) पुर:स्थापित किए गए।

विदेशों में गए सदभावना शिष्टमंडल

निरन्तर और तेजी से परिवर्तनशील अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में हमारी राष्ट्रीय नीतियों, कार्यक्रमों और समस्याओं को सही और स्पष्ट रूप से विभिन्न देशों में प्रसारित व प्रचारित करने और उनके दृष्टिकोण को समझने की आवश्यकता बहुत समय से अनुभव की जा रही थी। किसी भी देश के संसदविद उस देश की नीति के निर्धारण और अन्य देशों से संबंधों को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। विशेषकर, भारत जैसे प्रगतिशील प्रजातांत्रिक राष्ट्र के लिए नि:संदेह यह अति आवश्यक और उपयोगी है कि वह कुछ संसद सदस्यों व गण्यमान्य व्यक्तियों का चयन करें और इनका इस कार्य के लिए प्रभावी ढंग से उपयोग करें कि वे अन्य देशों में उनके समकक्ष व्यक्तियों और अन्य विचार बनाने वालों को विभिन्न क्षेत्रों में हमारी नीतियों, कार्यक्रमों, समस्याओं और उपलब्धियों को स्पष्ट करके उनको भारत के पक्ष में कर सकें। निःसंदेह, पूर्वोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सरकार द्वारा प्रायोजित संसद सदस्यों के शिष्टमण्डलों का आदान-प्रदान एक प्रभावी माध्यम साबित हुआ है। अत: संसद सदस्यों के तीन से चार शिष्टमंडल, संसदीय कार्य मंत्री/संसदीय कार्य राज्य मंत्री के नेतृत्व में, जिसमें संसद के दोनों सदनों में मुख्य सचेतक तथा संबंधित राजनैतिक दलों द्वारा चुने गए विभिन्न राजनीतिक दलों के सदस्य विदेशों का दौरा करते हैं। संसदीय कार्य मंत्रालय भी अन्य देशों से ऐसे ही शिष्टमंडलों का स्वागत करता है।

इस मंत्रालय में सन 1966 से भारत सरकार द्वारा प्रायोजित संसदीय शिष्टमंडलों नीति के दौरान मंत्रालय ने 31.12.2016 तक अलग-अलग देशों में 25 भारतीय संसदीय शुभेच्छा शिष्टमंडलों को भेजा है एवं अलग-अलग देशों के 13 संसदीय शिष्टमंडलों की मेंजबानी की है।

दिनांक 01.01.2016 से 31.12.2016 तक विदेश मंत्रालय तथा संबंधित भारतीय मिशनों के परामर्श से एवं प्रधानमंत्री के अनुमोदन से दो शुभेच्छा शिष्टमंडल ने विदेशो की यात्रा की हैं । एक 9 सदस्यीय भारतीय संसदीय शुभेच्छा शिष्टमंडल ने श्री मुख़्तार अब्बास नकवी , राज्य मंत्री, संसदीय कार्य मंत्रालय एवं अल्पसंख्यक मंत्रालय(स्वतंत्र प्रभार) के नेतृत्व में दिनांक 10 अप्रैल से 20 अप्रैल, 2016 के दौरान सिंगापुर, इंडोनेशिया और मलेशिया का दौरा किया तथा संसद के कार्यचालन और आपसी हित के अन्य मामलों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

शुभेच्छा शिष्टमंडल ने इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्निकल एजुकेशन, सिंगापुर का दौरा किया

11 सदस्यीय दूसरे शुभेच्छा शिष्टमंडल ने श्री अनंतकुमार, संसदीय कार्य मंत्रालय एवं रसायन ओर उर्वरक मंत्री जी के नेत्रत्व में दिनांक 16 अक्तूबर से 23 अक्तूबर 2016 के दौरान पुर्तगाल और स्पेन का दौरा किया तथा संसद के कार्यचालन और आपसी हित के अन्य मामलों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

शुभेच्छा शिष्टमंडल ने H. E. Mr. Jose Luis Ayllon Manso, Secretary of State for Parliamentary Relations of Spain से भेंट की

<u>मंत्रालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन</u>

संसदीय कार्य मंत्रालय में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2016 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन पर 14 सितंबर, 2016 को संयुक्त सचिव की ओर से हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए अपील परिचालित की गई। पखवाड़े के दौरान एक अनुभाग का निरीक्षण किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े का मुख्य समारोह 29 सितंबर, 2016 को आयोजित किया गया जिसमें मंत्रालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। इस दौरान माननीय गृह मंत्री का संदेश भी परिचालित किया गया। मुख्य समारोह में सचिव ने मंत्रालय के सभी कर्मचारियों को हिंदी में अधिका से अधिका कार्य करने का संकल्प कराया। इसके उपरांत पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को सचिव द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

हिंदी पखवाड़े के मुख्य समारोह के अवसर पर मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय

पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताएं तथा उनमें पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का ब्यौरा निम्न प्रकार है:-

प्रतिभागियों के नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि (रू. में)
1. श्री राहुल कुमार अग्रवाल, सहायक अनुभाग अधिकारी	पहला	2000/-
2. श्री अविनाश कुमार, वरिष्ठ सचिवालयिक सहायक	दूसरा	1500/-
3. श्री परेश गोयल, सलाहकार/सहायक	तीसरा	1000/-
4. श्री पंकज कुमार, वरिष्ठ सचिवालयिक सहायक	तीसरा	1000/-

प्रतिभागियों के नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि (रू. में)
1. श्री प्रविंद्र खत्री, कनिष्ठ सचिवालयिक सहायक	पहला	2000/-
2. श्री नरेंद्र कुमार, कनिष्ठ सचिवालयिक सहायक	दूसरा	1500/-
3. श्री अविनाश कुमार, वरिष्ठ सचिवालयिक सहायक	तीसरा	1000/-

प्रतिभागियों के नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि (रू. में)
1. श्री परेश गोयल, सलाहकार/सहायक	पहला	2000/-
2. मो. अस्दुल्लाह, संसद सहायक	दूसरा	1500/-
3. श्री राहुल कुमार अग्रवाल, सहायक अनुभाग अधिकारी	तीसरा	1000/-

प्रतिभागियों के नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि (रू. में)
1. श्री कमल किशोर, एम.टी.एस.	पहला	2000/-
2. श्री विपिन कटारिया, सवार हरकारा	दूसरा	1500/-
3. श्री आनंद कुमार, एम.टी.एस.	दूसरा	1500/-
4. श्री ब्रहम कुमार, एम.टी.एस.	तीसरा	1000/-
5. श्री गजराज सिंह, एम.टी.एस	तीसरा	1000/-

प्रतिभागियों के नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि (रू. में)
1. मो. अस्दुल्लाह, संसद सहायक	पहला	2000/-
2. श्री प्रविंद्र खत्री, कनिष्ठ सचिवालयिक सहायक	दूसरा	1500/-
3. श्री राहुल कुमार अग्रवाल, सहायक अनुभाग अधिकारी	तीसरा	1000/-
4. श्री प्रकाश चंद्र झा, वैयक्तिक सहायक	तीसरा	1000/-

प्रतिभागियों के नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि (रू. में)
1. श्री जे.एन. नायक, वैयक्तिक सहायक	पहला	2000/-
2. श्री ए.एन. बालचंद्रन नायर, सलाहकार/सहायक	दूसरा	1500/-
3. श्री पी.के. हलदर, अवर सचिव	तीसरा	1000/-
4. श्री संजित कुमार दास, सहायक अनुभाग अधिकारी	तीसरा	1000/-

मंत्रालय में मूल टिप्पण और आलेखन के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2015-2016 के लिए नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत निम्नलिखित कर्मचारियों ने पुरस्कार प्राप्त किए-:

प्रतिभागियों के नाम	**प्राप्त स्थान**	**पुरस्कार राशि (रू. में)**
1. श्री प्रकाश टहिलियानी, सहायक अनुभाग अधिकारी	पहला	2000/-
2. श्री प्रद्योत बेपारी, सहायक अनुभाग अधिकारी	दूसरा	1200/-
3. श्री अमर देव, सहायक अनुभाग अधिकारी	दूसरा	1200/-
4. श्री साधु राम, कनिष्ठ सचिवालयिक सहायक	दूसरा	1200/-
5. श्री अविनाश कुमार, वरिष्ठ सचिवालयिक सहायक	तीसरा	600/-
6. श्री जय नारायण, कनिष्ठ सचिवालयिक सहायक	तीसरा	600/-

हिंदी पखवाड़े के मुख्य समारोह के अवसर पर सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए।

14 सितंबर अर्थात् हिंदी दिवस पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2015-16 के लिए मंत्रालय को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है जिसे सचिव महोदय ने माननीय राष्ट्रपति से ग्रहण किया।

<u>मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति</u>

सरकार की राजभाषा नीति के सुचारू कार्यान्वयन के बारे में सलाह देने के उद्देश्य से विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी सलाहकार समितियों की व्यवस्था की गई है। इनका गठन केंद्रीय हिंदी समिति की सिफारिशों के आधार पर बनाए गए मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुसार किया जाता है। इन समितियों का मुख्य कार्य राजभाषा अधिनियम व नियमों में निर्धारित सिद्धांतों तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के संबंध में निर्धारित नीतियों और निदेशों के कार्यान्वयन में सलाह देना है। इन समितियों का कार्यकाल तीन वर्ष के लिए होता है।

संसदीय कार्य मंत्रालय में हिंदी सलाहकार समिति के गठन संबंधी आदेश को राजभाषा विभाग द्वारा सूचित किए जाने पर हिंदी सलाहकार समिति का गठन सर्वप्रथम 18 मई, 1984 को किया गया

था। तब से मंत्रालय में नियमित रूप से हिंदी सलाहकार समिति का गठन किया जाता है और समिति की बैठकें लगातार आयोजित की जाती हैं।

मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति का पुनर्गठन 16 जून, 2015 को तीन वर्ष के लिए किया गया था तथा समिति की पहली बैठक 24 जुलाई, 2015 को माननीय तत्कालीन संसदीय कार्य मंत्री की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी।

हिंदी सलाहकार समिति की पहली बैठक के पश्चात माननीय तत्कालीन संसदीय कार्य मंत्री के साथ समिति के सदस्य।

हिंदी सलाहकार समिति की दूसरी बैठक 30 मार्च, 2016 को माननीय तत्कालीन संसदीय कार्य मंत्री की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी।

हिंदी सलाहकार समिति की उक्त बैठक में समिति के सदस्यों के सुझाव पर पत्रिका का एक और अंक समिति की सदस्य श्रीमती सरोज शर्मा द्‌वारा तैयार किया गया है और इसे मंत्रालय की वैबसाइट पर डाला जा रहा है।

"फिर आयो बसंत"

सुमन बसंती, पवन बसंती, बासंती हर शाख फली।
बासंती दुल्हन की देखो लगती है हर बात भली॥

हमारे देश में अनेक पर्व मनाए जाते हैं और इन पर्वों का अपना-अपना इतिहास है। लेकिन बहुत से पर्व ऐसे भी हैं जो ऋतु परिवर्तन की सूचना लेकर आते हैं जैसे कि बसंत पंचमी का पर्व है। शिशिर ऋतु की ठिठुरन मिटाने के लिए बसंत ऋतु का आगमन होता है। यह पर्व विशेषकर उत्तर भारत में मनाया जाता है और हमें सूचना देता है शरद ऋतु के अवसान की। यूं तो प्रत्येक ऋतु का अपना महत्व है परंतु जिस तरह प्रकृति पर पूरी आभा और सुंदरता लेकर बसंत ऋतु आती है उस तरह कोई ऋतु नहीं आती।

वैसे देखा जाए तो चैत्र और बैसाख दोनों ही बसंत के महीने हैं लेकिन बसंत पंचमी का पर्व 40 दिन पहले ही माघ सुदी पंचमी को मनाया जाता है। कहा जाता है कि सब ऋतुओं ने बसंत को अपना राजा मानकर अपने-अपने समय में से आठ-आठ दिन उसे भेंट कर दिए। इस प्रकार पांचों ऋतुओं से बसंत को चालीस दिन मिल गए और इसलिए माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी से ही ऋतुराज बसंत का आगमन हो जाता है।

बसंत के पर्व को मनाए जाने की प्रथा भी काफी प्राचीन है। यह उस समय आरंभ हुई जब भारत हर तरह से संपन्न था और ऋतुराज के आगमन पर भोग और विलास के अतिरिक्त भारतवासियों के पास अन्य कोई विशेष कार्य नहीं रह जाता था। कहा जाता है कि बसंतोत्सव का यह पर्व मौर्यों के समय में आरंभ हुआ और गुप्तकाल तक पहुंचते यह उत्सव और भी लोकप्रिय हो गया। आज भी यह पर्व पंजाब, बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और बंगाल में खूब धूम-धाम से मनाया जाता है। भारत एक कृषि प्रधान देश हैं। इसलिए कृषक इसी दिन अपने हल की पूजा करते हैं और नए वर्ष की खेती का शुभारंभ करते हैं।

बसंत ऋतु मध्यम ऋतु कहलाती है। इस समय न तो अधिक गर्मी होती है और न ही अधिक सर्दी। अधिकता होती है तो बस उल्लास की, आनंद की। इस ऋतु में प्रकृति के सुंदर रूप को देखकर बच्चे-वृद्ध, स्त्री-पुरूष, चाहे वो किसी वर्ग के हों, सभी के मनोभाव खुशी से, स्फूर्ति से भर उठते हैं। समस्त चर-अचर उल्लसित होकर झूमता सा प्रतीत होता है। प्रकृति का संपूर्ण सौंदर्य अपने चरमोत्कर्ष पर होता है। वृक्षों से पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और उनमें मन को मुग्ध कर देने वाले गुलाबी रंग के नव पल्लव निकल आते हैं। वन में टेसू के फूल अंगारे की तरह लहकने लगते हैं। खेतों-खलियानों में फूली हुई सरसों के पीले फूल बसंत ऋतु की पीली धोती के समान नजर आते हैं। जौ और गेहुओं में बालियां आने लगती हैं। आमों के वृक्षों पर नव पल्लव पवन के संग लहलहाते हुए बेहद मनमोहक प्रतीत होते हैं। गुलाब, मालती, डहलिया और गुलदाउदी जैसे अनेक फूल अपनी अनुपम छटा में खिल उठते हैं जिन

पर भंवरे और तितलियां मंडराने लगती हैं। इस तरह समस्त प्रकृति अद्‌वितीय निखार के साथ नृत्य करती सी जान पड़ती है। बसंत को एक सामाजिक पर्व भी कहा जा सकता है क्योंकि यह जन-जन को प्रसन्न और उल्लसित करने के लिए आता है। किसान के लिए यह पर्व दूसरी फसल की तैयारी की सूचना देता है चैती फसल का कोई झंझट नहीं रहता है और इस प्रकार खेती के समस्त कार्यों से उन्मुक्त किसान प्रकृति के साथ आनंदविभोर हो उठता है। इसलिए इसे बसंत नवान्नेष्टि पर्व भी कहते हैं इस दिन नए अन्नय में घी और गुड़ मिलाकर कूटा जाता है जिसे एक सुस्वाद भोग तैयार होता है, फिर इस भोग को अग्नि देव तथा अन्य देवी-देवताओं और पितरों को अर्पण करने के उपरांत स्वयं ग्रहण करते हैं। बसंत के दिन बसंती अथवा पीले वस्त्र पहनना शुभ माना जाता है क्योंकि पीले वस्त्रों में बाग-बगीचों और पकती हुई फसल वाले खेतों के इर्द-गिर्द घूमने से मन को अच्छा महसूस होता है।

कहीं-कहीं बसंत के दिन लक्ष्मी सहित भगवान विष्णु की आराधना का भी विधान है। कुछ लोग इस दिन कामदेव की भी पूजा करते हैं, कहा जाता है कि कामदेवता की बसंत से घनिष्ठ मित्रता है। बसंत पंचमी का एक नाम श्री पंचमी भी है क्योंकि इस दिन विशेषकर नगरों में सरस्वती-पूजन के समारोह होते हैं। सरस्वती पूजन के संबंध में एक पौराणिक कथा प्रचलित हैं। श्रीकृष्ण ने सरस्वती पर प्रसन्न होकर उन्हें यह वरदान दिया था कि बसंत पंचमी के दिन मनुष्य तुम्हारी भी आराधना किया करेगा। इसी वरदान स्वरूप सरस्वती की भी इस दिन पूजा की जाती है। सरस्वती पूजन से एक दिन पूर्व बड़े नियम और सयंमपूर्वक रहना पड़ता है, दूसरे दिन भक्तिपूर्वक देवी की मूर्ति के समक्ष क्लश की स्थापना की जाती है। यह पर्व विद्‌यार्थी-समुदाय का भी है इसलिए वो दिन को अत्यधिक धूमधाम से मनाते हैं। विद्‌यालयों में वीणा और पुस्तक धारिणी सरस्वती की प्रतिमा स्थापित कर विद्‌यादान के लिए देवी की अर्चना-अराधना की जाती है। संगीत के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं और बसंत की सुंदरता पर कविताएं पढ़ी जाती हैं। छोटे बच्चों को अक्षरारंभ कराने का भी यह अत्यंत शुभ अवसर माना जाता है। इसी दिन पितृ-तर्पण एवं ब्राहमण भोजन का भी विधान है। ब्रज में राधा-कृष्ण का पूजन किया जाता है और लगातार कई दिन तक कीर्तन चलता है। पंजाब में तो बसंत पंचमी के दिन पतंग उत्सव पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। दिन भर जमकर पतंगबाजी के मुकाबले होते हैं। उत्तर प्रदेश में तो बसंत पंचमी के दिन से ही होली प्रारंभ हो जाती है इसी दिन पहले-पहल गुलाल उड़ाया जाता है और होली तथा धमार के गीत गाए जाने लगते हैं।

बसंत का यह पर्व हमें सफाई के महत्व और अध्ययन एवं अध्यापन में रूचि वर्धन की सीख भी देता है। एक तरफ नया अन्न मनुष्य को शक्ति प्रदान करता है तथा दूसरी ओर सांस्कृतिक कार्यक्रमों और उत्सवों से मन प्रफुल्लित हो उठता है। बसंत पंचमी के दिन आनंद और उल्लास की वेला के वर्ण, संप्रदाय तथा लिंग के भेद समाप्त हो जाते हैं। इस दिन होने वाले हवन और पूजन से प्राणी मात्र का आपस में तादात्म्य स्थापित हो जाता है। बसंत का यह पर्व एक ऐसी समता और एकता का आभास कराता है जैसे कि एक धागे में भिन्न-भिन्न रंगों के फूलों को पिरोकर एक सुंदर हार तैयार किया गया हो।

कली-कली की रंगत सुंदर
गुलशन सारे महक रहे हैं।
प्रकृति का है रूप मनोहर
ऋतु बसंत फिर लौट आया है।

मृगनयनी पाण्डेय
सहायक निदेशक
संसदीय कार्य मंत्रालय

प्रौढ़ावस्था में स्वास्थ्य की देखभाल

स्वास्थ्य की देखभाल करना हर आयु में आवश्यक हैं लेकिन प्रौढावस्था में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि शारीरिक गतिविधियां और क्रियाएं शिथिल पड़ जाती हैं। प्रौढ़ावस्था में एक अनजाना सा भय बना रहता है और दैनिक कार्यों तथा आसपास परिवेश में मन नहीं लगता और पाचन क्रिया भी कमजोर हो जाती है। इसलिए प्रौढ़ावस्था में मनो-वैज्ञानिक सहारे की बहुत आवश्यकता होती है जिससे उन्हें यह एहसास ना हो कि वो बोझ बन गए हैं। शरीर में आवश्यक तत्वों की कमी के कारण बहुत से रोग हो जाते हैं, जैसे खून की कमी, कमजोरी। इसलिए संतुलित आहार आवश्यक है और जरूरत होने पर उचित उपचार लेना चाहिए।

शारीरिक व्यायाम कम होने पर कब्ज जैसे रोग हो जाते हैं। नियमित रूप से घूमना, हल्का व्यायाम और हरी पत्तेदार सब्जियों व सलाद लेने से यह समस्या नही आती है। दांत कमजोर होने के कारण भोजन व अन्य खाद्य पदार्थों को चबाने में कठिनाई आने लगती है इसलिए ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए जिन्हें आसानी से चबाया जा सके।

पुरूषों में प्राय प्रोस्टेट ग्रंथि के बढ़ जाने से मूत्र बार-बार आने लगता है। कई बार मूत्र आना पूरी तरह रूक जाता है इसका उपचार चिकित्सक से कराना आवश्यक है। प्रौढ़ावस्था में प्राय: जोड़ों में दर्द रहने लगता है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। मुख्य कारण कम गतिविधियां है। इसलिए कुछ न कुछ करते रहना चाहिए, जिससे जोड़ चलते रहे। अगर दर्द ज्यादा अधिक है तो उपचार कराना चाहिए।

प्रौढावस्था में कम सुनना कम दिखना शुरू हो जाता है। आंखों में मोतियाबिन्द हो जाने पर कम दिखने लगता है। इसकी शल्य चिकित्सा करा कर चश्मा पहनने से दृष्टि ठीक हो जाती है। सुनने की मशीन लगाने से सुनाई शुरू होने लगता है। रक्त-चाप और दिल की बीमारी भी प्रौढ़ावास्था में अधिक होती है। इनका ठीक प्रकार से उपचार कराना चाहिए और खान-पान में वसायुक्त भोजन नही करना चाहिए, ताजी हरी पत्तेदर सब्जियां ,फल तथा रिफांईड तेलों का प्रयोग करना चाहिये। शरीर के वजन को बढ़ने से रोकना चाहिए।

मधुमेह का रोग आजकल अधिकाधिक लोगों को होता जा रहा है क्योंकि हमारा खानपान व रहन सहन बदल गया है। इससे बचने के लिए संतुलित आहार व नियमित व्यायाम करना आवश्यक है। जरूरत पड़ने पर उचित उपचार भी कराना चाहिए। अगर मधुमेह का उचित उपचार नहीं किया गया तो शरीर का प्रत्येक अंग प्रभावित हो सकता है गुर्दे खराब हो सकते हैं, मस्तिष्क के अंदर रक्त स्राव हो

सकता है जिससे पक्षाघात रोग हो सकता है। कभी-कभी रोगी की मृत्यु भी हो जाती है। दिल का दौरा भी पड़ सकता है। ऐसे लक्षण होने पर उचित उपचार कराना अत्यंत आवश्यक है।

प्रौढ़ावस्था में फेफड़ों के रोग भी अधिक होते है। अगर धूम्रपान की आदत हो तो और भी अधिक रोग होते है। दमा, निमोनिया रोग भी बहुत कष्टदायक होते है। इनका उपाचार भी कराना चाहिए।

प्रौढ़ावस्था में स्वास्थ्य की देखभाल करना बहुत जरूरी है। क्योंकि प्रौढ़ एक तो शारीरिक, मनोवैज्ञानिक रूप से कमजोर होते है और यदि कोई भी रोग लग जाए और समय पर इलाज शुरु ना हो पाये तो संभालना थोड़ा मुश्किल हो जाता है।

डॉ. एन.एस. रावत
भूतपूर्व प्रभारी हिंदी अधिकारी, के.स.स्वा.यो.(मु.)

‘जो नहीं है वो ख्वाब है, जो है वो लाजबाब है’
‘जो खोया उसका गम नहीं, जो पाया वह कम नहीं’

अनमोल वचन

1. जीतने वाले अलग कोई काम नहीं करते, बल्कि वो हर काम को एक अलग ढ़ंग से करते हैं।
2. जिन्हे मौके की पहचान नहीं होती उन्हें मौके का खटखटाना शोर लगता है।
3. जो अपने तुच्छ से तुच्छ दोष को भी भयंकर अपराध मानता है, वही महान व्यक्ति है।
4. जो नरमी से पांव रखता है, वह दूर तक यात्रा करता है।
5. आत्मविश्वास एक भक्ति है जो जीवन में क्रांति ला सकती है।
6. उद्देश्य के बिना जीवन बिना पतवार की नाव की तरह है।
7. असफलता गलतियों को दोहराने का नाम है।
8. जितनी बडी बाधा होगी अवसर भी उतना ही बड़ा होगा।
9. मैं खुद को जंग लगाने की बजाय प्रयोग होना पसंद करूंगा।
10. शांत समुद्र में नाविक कुशल नाविक नहीं बन सकता।
11. महान मस्तिषकों में उद्देश्य होते हैं, अन्य लोगों के पास इच्छाएं होती हैं।
12. सफलता पाने वाले व्यक्ति कठिनाइयों को खामोशी से सहन करते हैं।
13. शिक्षा ऐसी हो जो रोजी रोटी के साथ-साथ जीने का तरीका भी सिखाए।
14. कोई भी आपकी इजाजत के बिना आपको हीन महसूस नहीं करा सकता।

संकलन --- संपादिका द्वारा

<u>स्वयं स्वच्छता अभियान</u>

जी हां बिलकुल सही पढा है आपने, स्वयं यानि अपने आप की स्वच्छता। आजकल चारों ओर एक ही बात सुनाई देती है - स्वच्छ भारत अभियान। अपने आस-पास सफाई रखें। हर आदमी झाडू पोंछा बाल्टी लेकर निकल पड़ा है। वाकई बहुत शानदार शुरुआत है। स्वच्छता से अच्छी और कोई बात हो ही नही सकती। साफ-सफाई किसे पसंद नही हैं। स्वच्छ चीज या जगह न केवल सुदंर दिखाई देती हैं, बल्कि वातावरण भी स्वच्छ रहता है और हमें बीमारियों से भी बचाता है। लेकिन जरुरत इस बात कि हम अपनी शारीरिक सफाई के साथ-साथ अपने विचारों की, अपने दृष्टिकोण की भी सफाई करें।

नहा धो लेने से अच्छे कपड़े पहन लेने से, अपने घर ऑफिस कम्प्यूटर मोबाइल को साफ कर लेने से स्वच्छता अभियान संपूर्ण नहीं हो सकता। मन और सोच की आवश्यकता इससे कहीं ज्यादा है क्योंकि आजकल छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई हो जाती है। हमारे स्वभाव में गुस्सा प्रधान हो चुका है, **<u>ईर्ष्या</u>** आज हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। हर रोज कोई न कोई समाचार सुनने को मिल जाता है कि ट्रैफिक जाम या पार्किग न मिलने के कारण भयंकर झगड़ा हुआ कई बार तो जान भी चली जाती है।

हर व्यक्ति अहम का शिकार है अपने मुकाबले में कोई किसी को समझने को तैयार नही है। हर कोई अपने में एक अकड़ लिए हुए है हर वक्त चिड्चिडाहट, एक चिड़ जैसे हर वक्त हावी रहती है। सब कुछ होते हुए भी उसका उपयोग नहीं कर पाते है दूसरों से ऊपर जाने की होड़ और जलन के कारण जो हमारे पास है उसका भी आनंद नही ले पाते हैं। इंसान आज अपने दुख से नहीं दूसरों के सुख से दुखी है।

बाहर की सफाई करने में हम इतनी एकजुटता दिखाते हैं कि जगह-जगह आजकल लोग अपने इलाके की नलियों, पार्कों, सड़कों व फुटपाथों की सफाई करते नजर आते हैं। हर व्यक्ति जैसे सफाई की होड़ में लगा है। सब कुछ साफ होना चाहिए क्या कभी-कभी हम सोचते हैं कि हमारे दिल दिमाग पर गदंगी की कितनी परतें चढ़ चुकी हैं। इंसान अपनी इंसानियत खोता जा रहा है। आज के युग में गुस्सा करना, अकड़ दिखाना, तो मानो आधुनिकता का प्रतीक बन चुका है। हमारा समाज नाराज है, असंतुष्ट और कुंठित है जैसे हर किसी के पास कहीं न कहीं कुछ कमी रह गई है। नम्रता दया सहनशीलता और मृदुभाषा तो जैसे कहीं खो गए है।

आपसी मनमुटाव और भेद-भाव इस हद तक बढ़ चुके हैं कि कभी हम जाति के नाम पर, कभी धर्म के लिए और कभी किसी समुदाय के लिए लड़ रहे हैं, आज बदले की भावना नस-नस में इतनी भर

गई है कि माफ करना तो मानो हम भूल चुके हैं। घृणा, गुस्सा, **<u>ईर्ष्या</u>** ने चरित्र को इतना पतित कर दिया है कि शारीरिक सफाई से यह मलिनता साफ हो ही नही सकती।

चारों ओर हिंसा बढ़ती ही जा रही है। छोटे-छोटे बच्चे अपराध जगत में आ गए हैं। महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध हमारी गंदी मानसिकता व विकृत मनोस्थिति के परिचायक हैं।

स्वच्छता अभियान एक बहुत ही शानदार अभियान है और इसे सफल बनाना हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है, लेकिन उसके साथ ही हमें मन, विचारों, कर्म व्यव्हार की स्वच्छता की ओर भी ध्यान देना होगा क्योंकि स्वच्छता मन विचार और हृद्‌य की स्वच्छता से ही होती है।

आप सभी से करबद्ध प्रार्थना है कि मन की स्वच्छता की ओर भी ध्यान दें क्योंकि हम जीवन में कुछ भी बन जाएं, कितना भी कमा लें, लेकिन अगर एक अच्छा इंसान नहीं बन पाए तो हम सफल नहीं हो सकते। आइए हम जीवन में से घृणा, **<u>ईर्ष्या</u>**, क्रोध, अहम, अकड़, चिढ़न की सफाई करने का प्रयत्न करें और स्वयं को स्वच्छता अभियान से सही मायनो में जोड लें। दुष्यंत ने सही कहा है, 'कि कौन कहता है कि आसमान में छेद हो नहीं सकता एक पत्थर तो तबीयत से उछलो यारों।

सभी साथियो को स्वयं की स्वच्छता के लिए प्रेरित करने हेतु समर्पित।

धन्यवाद **सौरभ वशिष्ठ**

<u>मातृ भाषा के सम्मान की सीख</u>

आजादी के बाद रूस में भारतीय राजदूत की नियुक्ति हुई और राजदूत महोदय ने अपना परिचय पत्र पेश किया। सोवियत संघ ने परिचय पत्र यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि यह भारतीय भाषा हिंदी में हो या रूसी में।

सुविचार

आप जिस काम को कर सकते हैं, उसे आरंभ करें।
पहल में अपूर्व शक्ति का जादू हैं।

भारतवाणी हिंदी

जननी हैं भारतवर्ष, राष्ट्रभाषा है हिंदी हमारी।
हिंदी बनी पहचान हमारी और लिपि बनी देव नागरी।
हिंदी से हिंदोस्तान हैं, तभी तो ये देश महान है।
मैं असमंजस में हूँ पड़ी, गर्व करूं या धारण कर कर लूं चुप्पी।
जो मान है भारत का, जो कहलाती भारतवाणी है।
हम क्यों आज अपनी भाषा भूल चुके हैं।
अरे सीखो जी भर कर भाषाएं अनेक।
पर राष्ट्रभाषा को मत भूलो।
इसके हर अक्षर में मातृत्व झलकता।
भारतीय संस्कृति की आत्मा है जो उसको दिल से सम्मान दो।
14 सितम्बर को ही क्यों हम हिंदी दिवस।
नित हिंदी दिवस मनाएं।
मैं देखती हूं यह स्वप्न, हर भारतवासी की जुबां पर हो हिंदी
गर्व है हम सबको, राष्ट्रभाषा है हमारी हिंदी।

जन्नत निशा

(सदस्य हिंदी सलाहकार समिति)

जिंदगी एक मुस्कान भी

- जिंदगी में फूल भी है तो खार भी
  उगते सूरज की लाली तो अधेंरी रात भी
  फूलों से महकती बयार कभी
  तो तूफानों से घिरे झंझावत भी।

- जीवन तो ईश्वर का दिया वरदान है
  तो जिओ एक खुशनुमा सोच के साथ
  चुन लो राहों में हैं जो कंकड़ पत्थर
  ना सोचो कि इन राहों से किसको गुजरना हैं।

- यहां जो राहजन है वो ही राहवर भी है
  अगर फरियाद उनसे करें भी तो क्या फायदा
  कमजोर क्षणों में अश्कों को ना आने दो आंखों में
  फकीरी मस्ती में चलो इन राहों पर हार में ही होगी जीत भी।

- अहसासों की डोर पकड़ कर निभाओ हर रिश्ते को
  हर रिश्ते में हैं एक कांच की दीवार भी
  लाख कोशिशें कीजिए हर फसल के साथ
  उगते हैं अनचाहें झाड-झंकार भी।

- नियति का हर जीवन में ऐसा ही विधान है
  आप चलिए तो सही सन्मार्ग पर
  साथ देगा आपका यह संसार भी
  बन जाएगी जिंदगी एक मुस्कान भी
  बन जाएगी जिंदगी एक मुस्कान भी

सरोज शर्मा
(केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद)

हिंदी के संबध में कुछ रोचक जानकारी

- विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या 50 करोड है।
- विश्व में हिंदी समझने वालों संख्या 80 करोड है।
- अग्रेंजी और चीनी के बाद हिंदी विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है।
- फिजी, मारीशस, गुआना, सूरीनाम, ट्रीनिडाड और टोबेगो, संयुक्त अरब अमीरात में हिंदी को अल्पसंख्यक भाषा का दर्जा दिया गया है।
- ब्रिटेन की लंदन युनिवर्सिटी, कैम्ब्रिज और न्युयार्क युनिवर्सिटी में हिंदी पढाई जाती है।

डॉ. रंजना गुसाई

विभागाध्यक्ष

हिंदी संकाय, महर्षि दयानंद कॉलेज

मैंने अपनी ट्रेनिंग के एक-एक मिनट से नफरत की, फिर मैंने कहा, इसे किसी कीमत पर नही छोड़ना है, अभी तकलीफ सहो और बाकी की जिंदगी चैम्पियन की तरह गुजारो।

मुहम्मद अली

एक महान आदमी, एक प्रतिष्ठित आदमी से इस तरह से अलग होता है कि वह समाज के लिए नौकर बनने के लिये तैयार रहता है।

बी.आर. अम्बेडकर

सामान्य प्रयोग के हिन्दी के शब्द

Abstract of Teller's Receipt	गणक की रसीद का सार
Acceptance	सकार/स्वीकृती
Accepting House	सकार घर/स्वीकृति घर
Accommodation Bill	निभाव हुंडी/निभाव–पत्र
Account	लेखा/खाता/हिसाब
Account Payee Only	केवल अदाता खाता
Accounting Department	लेखा विभाग
Adjustment	समायोजन
Advance	पेशगी/अग्रिम/उधार
Advancing of Money	रूपया उधार देना
Advice	सूचना, समाचार, जानकारी
Agency	अभिकरण/एजेंसी
Agent	अभिकर्ता/एजेंट
Agreement	करार/अनुबंध
Agricultural Credit	कृषि साख
Allotment	आबंटन
Amount	राशि/ रकम
Amount Withdrawn	आहरित राशि/निकाली गई राशि
Annual Closing	वार्षिक सवंरण
Annuity	वार्षिकी
Apex Bank	शिखर बैंक
Assignee	समनुदेशती
Assignment	समनुदेशन/नाम करना
Association/Articles	संस्था का/अंतर्नियमावाली
Balance Sheet	तुलन पत्र
Balance with Other Banks	दूसरे बैंको में शेष राशि
Book	सूचना पुस्तक

Brokerage	दलाली
Call Money	शीघ्रावधि द्रवय
Cancellation Date	समाप्ति तारीख/रद्द करने की तारीख
Capital	पूंजी
Carry Back	पीछे डालना
Cash	नकद/नकदी/रोकण
Central	केंद्रीय बैंक
Clean	बे जमानती उधार
Commercial	वाणिज्यिक बैंक व्यवसायिक बैंक
Co-operative	सहकारी बैंक
Days	निपटारा अवधि
Dead	मृत खाता
Deposited	जमा राशि/जमा रकम
Exchange	विनिमय बैंक
In Operation	सक्रिय खाता
Industrial	उधोग बैंक
Live	जीवित खाता
Memorandum of	संस्था का/ज्ञानाप -पत्र
Non-Scheduled	गैर-अनुसूचित बैंक
Payment	अग्रिम अदायगी, पेशगी भुगतान
Period	लेखा अवधि
Prompt	तुरंत अदायगी/भुगतान
Reserve	रिजर्व बैंक
Savings	बचत बैंक/सेविंग्स बैंक

'प्रत्येक घटना के उज्जवल पक्ष को देखने के स्वभाव का मूल्य हजारों रूपये प्रतिवर्ष से अधिक होता हैं।

'डेल कारनेगी'